समास-परिचय

विभक्तियों के प्रयोग में बताया जाता है कि किस कारक के अर्थ के लिए कौन-सी विभक्ति का प्रयोग होगा। किन्तु कहीं-कहीं शब्दों की विभक्तियों का लोप कर दिया जाता है और शब्द छोटे कर लिए जाते हैं । यह तब सम्भव होता है, जब दो से अधिक शब्द एक साथ जोड़ दिए जाते हैं । इस जोड़ने की प्रक्रिया को ही 'समास' कहते हैं ।

'समास' शब्द 'सम्' (भली प्रकार) उपसर्ग लगा कर अस् (फेंकना) धातु से बना है और इसका प्रायः वही अर्थ है जो 'संक्षेप' शब्द का अर्थ होता है, अर्थात् दो या अधिक शब्दों को इस प्रकार साथ रख देना कि उनके आकार में कुछ कमी भी हो जाए और अर्थ भी पूर्ण विदित हो; जैसे सभायाः पतिः सभापतिः।

यहाँ 'सभापति' का वही अर्थ है जो 'सभायाः पतिः' का, किन्तु दोनों को साथ कर देने से "सभायाः" शब्द के विभक्तिसूचक प्रत्यय (-याः) का लोप हो गया और इस कारण शब्द 'सभापतिः "सभायाः पतिः" से छोटा हो गया।

जैसे दो शब्दों को जोड़ कर समास करते हैं, वैसे दो या अधिक समास (समस्त शब्द) भी जोड़े जा सकते हैं; जैसे

राज्ञः पुरुषः राजपुरुषः; घनस्य वार्ता = घनवार्ता, इस प्रकार दो : समस्त शब्द हुए। अब यदि ये दोनों जोड़ दिए जाएँ तो राजपुरुषस्य घनवार्ता = "राजपुरुषघनवार्ता"- यह एक समस्त पद बना । इस प्रकार कितने ही शब्दों को जोड़ कर लम्बे- लम्बे समास बनाये जा सकते है। संस्कृत-साहित्य में किसी-किसी ग्रन्थ में ऐसे-ऐसे समास हैं जो कई पंक्तियों के हैं। इनका अर्थ निकालना कठिन हो जाता है और इसी से ग्रंथ जटिल हो जाता है।

किसी समस्त शब्द को तोड़ कर उसका पूर्वकाल का रूप दे देना "विग्रह" कहलाता है। विग्रह का अर्थ है-टुकड़े-टुकड़े करना, समस्त शब्द के टुकड़े करके ही पूर्व रूप दिखाया जा सकता है, इस लिए यह विग्रह है। उदाहरणार्थ 'घनवार्ता' का विग्रह 'घनस्य वार्ता' हुआ। ..

किन शब्दों को कैसे और किन के साथ जोड़ सकते हैं, इसके सूक्ष्म से भी सूक्ष्म नियम संस्कृतव्याकरणकारों ने नियत कर रखे हैं। ऐसा नहीं है कि जिस शब्द को जब चाहा तब दूसरे के साथ जोड़ दिया। उदाहरणार्थ,

'रघुवंश का लेखक कालिदास प्रसिद्ध कवि था' इस वाक्य का अनुवाद हुआ 'रघुवंशस्य लेखकः कालिदासः प्रसिद्धः कविः आसीत्'। इस संस्कृत वाक्य में यदि समास करें तो इस प्रकार होगा 'रघुवंशलेखककालिदासः प्रसिद्धकविः आसीत्'।

"कविः" और "आसीत्" में समास नहीं हुआ, "कालिदासः" और “प्रसिद्धः" में समास नहीं हुआ।

कब किन दशाओं में समास हो सकता है, इसके मुख्य-मुख्य नियमों की चर्चा आगे की जाएगी।

समास के मुख्य चार भेद है-- (१) अव्ययीभाव (२) तत्पुरुष (३) द्वन्द्व और (४) बहुव्रीहि।

तत्पुरुष के अन्तर्गत दो प्रसिद्ध समास और हैं - (१) कर्मधारय और (२) द्विगु; इसलिए कभी-कभी समास के छः भेद बताए जाते हैं। इन छः भेदों के नाम इस श्लोक में पाते हैं :

द्वन्द्वो दिगुरपि चाहं मद्गेहे नित्यमव्ययीभावः।

तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं स्याम्बहुव्रीहिः॥

समास के चार भेद समास में आए हुए दोनों शब्दों की प्रधानता अथवा अप्रधानता पर किए गए है। अव्ययीभाव समास में समास का प्रथम शब्द प्रायः प्रधान रहता है, तत्पुरुष में प्रायः दूसरा, द्वन्द्व में प्रायः दोनों प्रधान रहते हैं और बहुव्रीहि में दोनों में से एक भी प्रधान नहीं रहता, दोनों पद मिल कर एक तीसरे शब्द के ही विशेषण होते हैं।